CBSE Test Paper 03

Ch-2 एवेरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

1. तेनजिंग से मिलने पर लेखिका ने अपना परिचय कैसे दिया?
2. एवरेस्ट की चोटी पर कौन-सी समस्या खतरा बनकर खड़ी थी?
3. एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा पाठ के आधार पर बताइए कैंप चार कहाँ और कब लगाया गया?
4. सागरमाथा क्या है? लेखिका को यह नाम कैसा लगा? एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा पाठ के सन्दर्भ में बताइए।
5. कर्नल खुल्लर ने किस कार्य को जबरदस्त साहसिक बताया?
6. साउथ पोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की?
7. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा पाठ में उपनेता प्रेमचंद ने किन परिस्थितियों से अवगत कराया?
8. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा पाठ के आधार पर बताइए लेखिका के तम्बू में गिरे बर्फ-पिंड का वर्णन किस तरह किया गया है?

CBSE Test Paper 03

Ch-2 एवेरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

Answer

1. तेनजिंग से मिलने पर लेखिका ने अपना परिचय देते हुए कहा - मैं बिलकुल नौसिखिया हूँ और एवरेस्ट मेरा पहला अभियान है।
2. एवरेस्ट की चोटी शंकु के आकार की थी, जहाँ दो व्यक्तियों के एक साथ खड़े होने की जगह नहीं थी। हजारों मीटर सीधी ढलान पर फिसल जाने का डर था।
3. कैप चार 7900 मी. की ऊँचाई पर साउथकोल पर 24 अप्रैल को लगाया।
4. 'सागरमाथा' एवरेस्ट का दूसरा नाम है। एवरेस्ट का यह नाम नेपालियों में प्रसिद्ध है। लेखिका को एवरेस्ट का यह नाम अच्छा लगा।
5. लेखिका अपने दल के साथ एवरेस्ट अभियान पर जाती हुई 16 मई को सवेरे कैंप-दो पर पहुँची। जिस शेरपा की टाँग टूटी थी उसे स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाए। इस कार्य को कर्नल खुल्लर ने इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा कार्य का एक जबरदस्त साहसिक कार्य बताया।
6. साउथ पोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। उसने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलेंडर इकट्ठे किए। उसके बाद लेखिका अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने के लिए एक थरमस में जूस तथा दूसरे में चाय भरने के लिए नीचे उतर गई।
7. अभियान दल के उपनेता प्रेमचन्द अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे। वे 26 मार्च को पैरिच लौट आए और आकर उन्होंने पहली बड़ी बाधा खंभु हिमपात की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि कैम्प-एक 6000 मीटर ऊपर है, जो हिमपात के ठीक ऊपर ही है। वहाँ तक जाने का रास्ता साफ कर दिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झाँड़ियों से रास्ता चिह्नित कर सभी बड़ी बाधाओं का जायज़ा ले लिया गया है। यह भी बताया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और अभी बर्फ का गिरना जारी है। हिमपात के कारण सारा काम व्यर्थ भी हो सकता है तथा हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा भी करना पड़ सकता है।
8. लेखिका के तम्बू में गिरे बर्फ पिंड का वर्णन इस प्रकार किया है : 15-16 मई, 1984 को बुद्ध पूर्णिमा की रात लगभग 12:30 बजे लेखिका के कैम्प-तीन के नायलॉन के तम्बू के ऊपर एक भारी बर्फ पिंड आ गिरा। यह लेखिका के सिर के पिछले हिस्से से टकराया। उसकी नींद खुल गई। यह बर्फ पिण्ड कैम्प के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा। उसका विशाल हिमपुंज बन गया था। हिमखण्डों, बर्फ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ के इस विशालकाय पुंज ने एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेजगति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए कैम्प को तहस-नहस कर दिया था। इससे प्रत्येक व्यक्ति को चोट तो लगी, पर मरा कोई नहीं।